माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

2009

परीक्षा का नाम की सील: हाई स्कूल परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील: केन्द्र क्र. 401024

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 401 परीक्षा का विषय Hindi (General)
2. परीक्षा का माध्यम English परीक्षा की दिनांक 19-03-09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: T-1002 सेट:

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक K [redacted]

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	4	6	2	0	0	7	6

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

[redacted]	nine	four	six	two	zero	zero	seven	six

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में one अंकों में 1

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 2. में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ____

नाम श्रीमती चौकसे पद उ. श्री. शि.

पता/संस्था श्री म. रा. शा. उ. मा. वि.

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
कु
प्रा

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका[illegible] चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया ग[illegible] पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) Smt. Sarita Dubey

परीक्षक क्रमांक R.No.- 9740008

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक..........

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक..........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौंपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक
—	+		=	

B S E M P

प्र.1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) तुलसीदास राम-भक्ति शाखा के कवि थे।

ii) संस्कृति की प्रवृत्ति महाफल देने वाली होती हैं।

iii) पीड़ा को दुलारने वाला घनश्याम है।

iv) 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया।

v) 'सिंगार' शब्द का तत्सम रुप श्रृंगार है।

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या एक शब्द में दीजिए।

उ. i) होली खेलने के लिए 'मीरा' फागुन के चार दिन मनाती हैं।

उ. ii) 'सच्ची वीरता' निबन्ध के लेखक सरदार पूर्ण सिंह हैं।

उ. iii) 'जो कम बोलता है उसे अल्पभाषी कहते हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

उ. iv) 'एक अनार सौ बीमार' का अर्थ है- वस्तु एक पर चाहने वाले अनेक।

प्र. v) समयाभाव का बहाना बनाने वाले लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं।

प्र. 3 स्तम्भ 'क' से 'ख' का मिलान कर जोड़ी बनाइये.

i) इस नदी की धार में	दुष्यन्त कुमार
ii) तुम वही दीपक बनोगे	दिवाकर वर्मा
iii) हर्ष, विस्मय, घृणा, खुशी, शोक, करुणा आदि भावों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।	विस्मयादिसूचक चिन्ह
iv) मजदूरी और प्रेम	सरदार पूर्णसिंह
v) 'क्षणिक' का विलोम शब्द है	शाश्वत

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्र. 4 सत्य - असत्य

i) संस्मरण' में कल्पना तत्व प्रधान

+ [ ] = [ ]

पृष्ठ 5 के अंक   कुल अंक

होता है। असत्य

ii) 'साये में धूप' दुष्यन्त कुमार का गज़ल -संग्रह है। सत्य

iii) 'नववर्ष मंगलमय हो' इच्छावाचक वाक्य है। सत्य

iv) 'कर्मवीर' कविता में 'ओज' गुण है। सत्य

v) अर्थ के आधार पर वाक्यों को दस भागों में बाँटा जा सकता है। असत्य

P S E M P

प्र5 सही विकल्प लिखिए

प्र i) 'राष्ट्र संवर्धन' का सबसे प्रबल कार्य है
उ संस्कृति की साधना

प्र ii) 'तुम्हारी विरासत' कविता का स्वर है
उ ~~यथार्थवादी~~ आस्थावादी

प्र iii) समस के पद होने चाहिए
उ दो

पृष्ठ के अंकों का योग

प्र.4 "यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है, हम सब इसकी डालियाँ है।" यह कथन है:

उ. दादाजी का।

प्र.5 'मजदूरी और प्रेम' निबन्ध के अनुसार सच्चा आनंद प्राप्त होता है:

उ. श्रम से।

प्र.6 'वह देश कौनसा है।" कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उ. पं राम नरेश त्रिपाठी रचित कविता 'वह देश कौन सा है' में भारत देश की विशेषताओं का वर्णन है। कवि कहते है कि भारत का प्रकृतिक सौन्दर्य अप्रतिम है। हिमालय भारत का मुकुट है, सागर निरन्तर इसके चरण धोता प्रतित होता है। अर्थात प्रकृति भी भारत के आगे नतमस्तक। यहाँ अमृत की धारा बहाने वाली नदियाँ है जिससे सिंचकर धरती हरी-भरी हो गई है और फल, फुल आदि प्रदान करती है। यहाँ के सुगन्धित फूल हमें आनन्दित करते हैं। भारत देश संसार का शिरोमणी है। भारत

BSEMP

ने ही संपूर्ण विश्व को जगाया और एक ज्ञान का संदेश दिया। इस भूमि पर राम, लक्ष्मण, भरत आदि पौराणिक नायकों को जन्म दिया। अन्त में कवि कहते है जो सुशिक्षित है वे लोग ही यह सब भारत के बारे में बता सकते हैं।

प्र- 'बरखा गीत' गीत के अनुसार वर्षा के आगमन पर धरती में क्या क्या परिवर्तन होते हैं।

उ- कवि श्री रमानाथ अवस्थी कहते है कि दुख के बाद सुख का आगमन अवश्य होता हैं। ग्रीष्म ऋतु के भयंकर ताप के बाद वर्षा ऋतु आती हैं। वर्षा के आगमन पर धरती हरी-भरी हो जाती है। मरुस्थल भी वर्षा के आगमन पर भीग चुका है। आकाश में आनन्दित करने वाली बदली छा गई है। पेड़ो की छाया गहरी हो गई हैं। पेड़ो पर झूले पड़ गये है, युवतियाँ इस झूले पर झूलती है और सावन में गाये जाने वाला गीत (कजली) गाती हैं। पृथ्वी एवं प्राणियों की प्यास बुझ जाती है।

BSEMP

सारा वातावरण सुख और आनन्द से भर जाता है।

प्र.8 'शबरी' ने कुटिया में राम और लक्ष्मण का सत्कार कैसे किया।

उ. शबरी बहुत वर्षों से श्रीराम के आने की प्रतिक्षा कर रही थी। जब श्रीराम उनकी कुटिया मे आते है, तब वह विह्वल हो जाती हैं। वह सोचती है कि वह उनका सत्कार कैसे करे। उनके स्वागत के लिए कौन-सी वस्तु लाए। शबरी सर्वप्रथम श्रीराम के चरण धोती हैं। फिर उन्हे मृगचर्म के आसन पर बिठाती हैं। फिर वह उनके स्वागत के लिए लाए गए बेर उन्हें भेंट करती हैं।

प्र.9 सम्राट अशोक के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उ. सम्राट अशोक के चरित्र की विशेषताए:

1. वे साहसी, वीर और पराक्रमी थे।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

2. वे गुणग्राही थे उन्होंने बालिका अमिता के गुणों को ग्रहण कर मुद्रण करने की प्रतिज्ञा की थी।

3. वे स्त्री जाती का सम्मान करते थे, उनपर अस्त्र- शस्त्र नहीं चलाते थे।

4. वे दृढ़- निश्चयी थी, जब उन्होंने अमिता के आगे प्रण लिया उसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर विजय पाने की कामना त्याग दी थी।

प्र.10 "विद्वता की शोभा अहंकार नहीं विनम्रता है।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. 'विद्वता की शोभा अहंकार नहीं विनम्रता है क्योंकि अहंकार से विद्वता कभी भी प्रदर्शित होती है। वृद्धा ने भी कवि माघ के अभिमान युक्त पांडित्य को स्वीकार न करके विनम्र रहने की सीख दी। विनम्र व्यक्ति भले ही अनपढ़ ही क्यों न हो पर तब भी लोग उसके बारे में अच्छा ही सोचते हैं। परन्तु, जब कोई विद्वान व्यक्ति अपनी विद्वता को अहंकार से प्रदर्शित करता है तो उसकी विद्वता की कोई

महत्व नहीं रहता। इसलिए हमें विनम्र बनते हुए विद्वता को प्रदर्शित करना चाहिए जिससे सबका लाभ हो।

प्र.1) प्रसन्न व्यक्ति की ओर लोग क्यों आकर्षित होते हैं?

उ. प्रसन्नचित्त व्यक्ति की ओर सब आकर्षित होते हैं और उसकी मैत्री प्राप्त करना चाहते हैं। प्रसन्नता एक आध्यात्मिक वृत्ति, एक दैवी चेतना है जिसका आश्रय ग्रहण करने वाले के सारे शोक संताप दूर हो जाते हैं। जब लोग प्रसन्नचित्त व्यक्ति को देखते हैं तो वे भी प्रसन्न हो जाते हैं और अपने सारे शोक भूल जाते हैं। वहीं अप्रसन्न रहने वाले व्यक्ति के साथ कोई रहना पसंद नहीं करता। सब उससे दूर भागते हैं। मुस्कान में एक प्रकार का सम्मोहन है जिसके द्वारा हम हर व्यक्ति का दिल जीत सकते

B S E M P

हैं।

प्र.१४ 'उपन्यास' विधा का संक्षिप्त परिचय देते हुए प्रेमचन्द के नाम लिखिए।

उ. 'उपन्यास' एक ऐसी गद्य रचना है जो अपने अन्दर अनेक गौण कथाएँ समेटे हुए होती हैं। उपन्यास बहुत विस्तृत होता हैं। इसमें जीवन में घटित बहुत सी घटनाओं का समावेश होता हैं। 'उपन्यास प्रसाद-नम्' का अर्थ है किसी ~~चित्र~~ चीज को इस प्रकार संजोकर रखना जिससे पढ़ने वाले का लाभ हो।

उपन्यास अंग्रेजी के 'नॉवेल' शब्द का पार्यायवाची हैं। संस्कृत में उपन्यास के लिए 'नवल' शब्द का प्रयोग किया गया था। उपन्यास आज के युग की बहुत प्रसिद्ध विधा हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार— 'युग की गतिशीलता ~~शैली~~ सहज शैली है ~~किसी~~ किसी चित्र में किसी ~~एक~~ चित्र का पूर्ण मनोभाव प्रदर्शित करने वाला गद्य उपन्यास कहलाता है।

मुंशी प्रेमचंद को 'उपन्यास-सम्राट' भी कहा जाता हैं। उनके प्रमुख

उपन्यास है - गबन, गोदान, कर्मभूमि, सेवासदन आदि।

प्र.13

(क) दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए-

प्र.(अ) हमारी देश की सरकार ईमान्दार है।
शुद्ध हमारे देश की सरकार ईमानदार है।

प्र.(ब) कश्मीर की सौन्दर्यता मनमोहक है।
शुद्ध कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है।

प्र.13(ख) वर्तनी शुद्ध कीजिये-

	अशुद्ध	शुद्ध
1	उज्जैनी	उज्जयिनी
2	ज्योतस्ना	ज्योत्सना

प्र.14

(क) पर्यायवाची शब्द :

1 फूल = पुष्प, कुसुम, सुमन।

BSEMP

पृष्ठ के अंक

2. आकाश :- अम्बर, नभ।

प्र.4(ख) विलोम शब्द :-

1	उपकार	अपकार
2	लाभ	हानि

प्र. 5

(क) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए.

अ गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए। (आज्ञावाचक)

उ. गुरुजनो का सम्मान करो।

ब प्रशान्त घर पर है। (सन्देहवाचक)

उ. शायद प्रशान्त घर पर है।

प्र.5(ख) वाक्यों के शुद्ध रुप लिखिए.

(अ) भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि के कारण समझाओ बताइए।

शुद्ध- भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या का कारण बताइए।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

ब शोभा गाना गाता है।
शुद्ध शोभा गाना गाती है।

प्र.16 "कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। छोटी-बड़ी सभी डालियाँ उसकी छाया को बढ़ाती है।" सुखी डाली एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ. सुखी डाली के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क बताते है कि "कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। छोटी-बड़ी डालियाँ उसकी छाया को बढ़ाती है।" जिस प्रकार छोटी-बड़ी सभी डालियाँ मिलकर वृक्ष की छाया बढ़ाती है उसी प्रकार संयुक्त परिवार के सभी छोटे-बड़े लोग मिलकर उस सुख शांति को बढ़ाते है। इस एकांकी मे दादाजी को वटवृक्ष की भाँति बताया गया है। जिस प्रकार वटवृक्ष की छाया स्थाई-सुखद और सुन्दर होती है उसी प्रकार घर के मुखिया के संचालन से सुखी और समृद्ध रहता है। जिस प्रकार वट वृक्ष अपने अंदर अनगिनित फुल-पत्ते, घोसले

BSEMP

आदि संभाले हुए है उसी प्रकार दादा जी भी सब को साथ में लेकर चलते हैं। उनका मानना है कि परिवार के सभी सदस्य एक समान हैं। वे कहते हैं कि यदि वटवृक्ष से कोई भी डाली टूट कर गिर जाती है तब लाख पानी देने पर भी उसमे सरसता नहीं आती, ठीक उसी प्रकार परिवार के ~~सब~~ से भी यदि कोई अलग हो जाता है तो लाख कोशिश करने पर भी अपनत्व की भावना नहीं आती। जिस प्रकार वटवृक्ष ~~सब~~ सभी चीजों को साथ में लेकर चलता है तभी उसका अस्तीत्व होता हैं। उसी प्रकार परिवार के सभी सदस्य साथ में मिल-झुलकर रहे तो बहुत फायदा होता हैं। हमें वटवृक्ष से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए और वटवृक्ष की तरह एकता का पाठ पढ़ना पड़ेगा। इस लिए अनेक कारणों से उक्त उक्ति को स्पष्ट कर सकते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O

प्र.7 संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

"पायो - - - - - - - - - - - गायो।"

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वासंती' के पाठ -3 'मीरा के पद' से अवतरित की गई हैं। इसकी रचयिता मीराबाई हैं।

प्रसंग:- इन पंक्तियों में रामरतन धन को अमोलक कहा गया हैं।

व्याख्या:- कवयित्री कहती हैं कि उन्हें अपने सतगुरु, की कृपा से राम रतन धन नामक अमूल्य धन प्राप्त हो गया हैं। उन्होंने इस जनम- जनम की पूंजि अर्थात- रामरतनधन को प्राप्त करने के लिए लोक- लाज सब कुछ खो दिया हैं। यह धन खर्च क नहीं हो सकता है और न ही इसे चोर चुरा सकते हैं। यह धन तो सवाया के रूप में दिन- दिन बढ़ता ही है। सत की नाव के खेवनहार सतगुरु है। सतगुरु सत रूप नाव पर बैठकर ही भवसागर को पार

B
S
E
M
P

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ ...

किया जा सकता है। सतगुरु ही हमें इस संसार रूपी भवसागर से पार करा सकते हैं। अंत में मीरा जी कहती हैं कि वे अपने प्रभु गिरधर नागर अर्थात् श्री कृष्ण के हर्षित हो-होकर यश गा रही हैं।

प्र.18. अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए

उ. (अ) 'माँ' उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है।

प्र. ब मनुष्य को संसार से परिचित कौन कराता है?

उ मनुष्य को संसार से परिचित कराने वाला विधाता माँ ही है।

उ. स माँ और मातृभूमि संसार के सभ देश और सभी भाषाओं में वंदनीय है। वे स्वर्ग से भी अधिक प्यारी होती हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

प्र.19 पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उ.(अ) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक युवा है।

उ.(ब) युवा काल को भी काल दिखा सकते हैं, वे देश का सौभाग्य खून से लिख सकते हैं। साथ ही वे युग को नई तस्वीर दे सकते हैं और शत्रुओं का कलेजा चीर सकते हैं।

उ.स युवा अपनी गर्जना से शत्रुओं का कलेजा चीर सकते हैं।

प्र.20 विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु प्राचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उ. सेवा में,
माननीय प्राचार्य महोदय,
संस्कार हाई स्कूल,
देवास (म.प्र.)।

विषय :- शाला छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।

श्रीमानजी,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं 'अ' कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरे पिताजी का तबादला भोपाल हो गया है। मेरा पूरा परिवार भोपाल जाकर ही रहेगा। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई इस विद्यालय में जारी नहीं रख सकती।

कृपया करके मेरा शाला छोड़ने का प्रमाण-पत्र देने का कष्ट करें ताकि मुझे वहाँ के किसी विद्यालय में दाखला मिल सके। मैं इस बात के लिए सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

धन्यवाद।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

दिनांक : 06/04/09

आपकी आज्ञाकारी छात्रा,
अ ब स
कक्षा - दसवी 'अ'

प्र.2) निबन्ध लिखिए :

उ.

—निबन्ध—

विज्ञान वरदान या अभिशाप

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना।
2. प्राचीन काल में विज्ञान
3. आधुनिक काल में विज्ञान।
4. विज्ञान वरदान के रुप में।
5. अंतरिक्ष में विज्ञान।
6. विज्ञान अभिशाप के रुप में।
7. उपसंहार।

"जिसने नई सभ्यता दी है, मानव की संतान को।
श्रद्धायुक्त प्रणाम है मेरा उस विज्ञान महान को।
विष्णु सा पालक है जो है शंकर सा संहारक।
पूजा उसकी शुद्ध भाव से करो आज के अधारकों

प्रस्तावना :- आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। यह

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

इसलिए कि विज्ञान आज के युग पर पुरी तरह छा चुका है। जिधर देखो उधर विज्ञान ही दिखाई देगा। जिधर सुनो उधर विज्ञान ही सुनाई देगा। विज्ञान ने मनुष्य को ऐसे- ऐसे उपकरण दिये है कि मानव दाँतो तले उँगली दबाए रह जाता है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने कहा है —

"पूर्व युग सा आज का जीवन नहीं लाचार
आ गया है दूर द्वापर से बहुत संसार
यह समय विज्ञान का सब भाँति पूर्ण समर्थ
खुल जाये गुढ़ संसृति के अमित गुरु अर्थ
चिरता तम को सँभाले है बुद्धि की पतवार
आ गया है ज्योति की नव- भूमि में संसार।

2

प्राचीन युग और काल में विज्ञान - विज्ञान मात्र आधुनिक युग की ही देन नहो है अपितु प्राचीन युग की देन है। आर्यभट्ट, सुश्रुत, चरक आदि विज्ञान जगत के आदर्श माने जाते है। महाभारत के अस्त्र- शस्त्र हो या रामायण का पुष्पक विमान इन सब का विकसित रुप आज हम मिसाइलें और हवाई

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

जहाज के रूप में देख सकते हैं।
शून्य बिन्दु का आविष्कार प्राचीन विज्ञान ने ही किया था। यहाँ तक की चकमक पत्थर से सर्वप्रथम अग्नि उत्पन्न करना भी एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि थी।

"अपने अद्भुत चमत्कारों से कर दिया चकित जहान।
घर-घर उल्लास भरिया नाची मुश्किल हुई आसान।।"

3. आधुनिक काल में विज्ञान :- विज्ञान ने आकाश - पाताल के अनेक गूढ़ रहस्यों को सुलझा दिया है। आज का युग बटन का युग बन गया है। बटन दबाते ही अनेक वैज्ञानिक उपकरण हमारी आज्ञाकारी सेवक की भाँति सेवा करने लगते हैं।

"विज्ञान के चमत्कारों से सिर चकराया।
इतना सब कुछ देखकर दिल घबराया।।"

4. विज्ञान वरदान के रूप में :- विज्ञान वास्तव में मानव के लिए वरदान बनकर आया है। कहा

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

भी गया है -

"यह समय विज्ञान का सब भाँति पूर्ण समर्थ।
खुल जाये शुद्ध संसृति के अमित गुरु अर्थ।।"
विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान के चमत्कार
निम्नलिखित है -

i) शिक्षा के क्षेत्र में :- शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान ने मनुष्य को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं। टी.वी. कम्प्यूटर, रेडियो आदि शिक्षा को सरल बनाने के साधन हैं।

ii) चिकित्सा के क्षेत्र में :- विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक उपकरण तैयार किये। ऐसा कोई रोग नहीं जिसका इलाज सम्भव न हो। टी.बी. कैंसर जैसे रोगो का भी आज उपचार संभव है।

iii) कृषि के क्षेत्र में :- विज्ञान ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। खाद का उत्पादन कई गुणा बढ़ गया है। ट्रैक्टर, सिंचाई के पम्प, बीज बोने से लेकर काटने

पृष्ठ के अंकों का योग

तक के रासायनिक उर्वरक विज्ञान ने ही प्रदान किये हैं।

(v) आवागमन के क्षेत्र में :- आवागमन के द्रुतगामी साधनों के कारण आज मनुष्य दिल्ली में भोजन करता है, कलकत्ता में पानी पीता है और मुम्बई में जा कर शयन करता है। आज हम अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों की यात्रा स्वप्न नहीं रह गई। यात्रा सरल, सुखद और सुरक्षित है।

"अणुयुग बने जीवन धरा, स्वर्ग सुलभ का साधन।
मानवता ही विश्व सत्य भू-राष्ट्र करे आत्मार्पण।"

इस प्रकार विज्ञान ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है –

"चरमोत्तम है जगत में कि आज विज्ञान ज्ञान
बहुभौतिक साधन यंत्र यान वैभव महान
सेवक हैं विद्युत वाष्प शक्ति धन-बल नितांत।"

5. अंतरिक्ष में विज्ञान :- विज्ञान ने इनसेट, भास्कर, रोहिणी आदि

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 1946200716

20010

परीक्षक के लिये

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 19/3/09
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील केन्द्र क्र. 461024
4. केन्द्र क्रमांक हाई स्कूल परीक्षा
6. परीक्षा का नाम
7. विषय Hindi (General) माध्यम English
8. दिनांक 12-03-09

पृष्ठ

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर दी है। जिस चंद्रमा को देखकर बड़े-बड़े विद्वान केवल—

"Twinkle Twinkle little star, How I wonder what you are."

कहकर संतुष्ट हो जाते थे। उसे भी मानव की पिपासा से शांत कर दिया है। मानव चंद्र यात्रा कर आया है, अब मंगल और दूसरे ग्रहों की बारी है।

6. विज्ञान अभिशाप के रूप:- जिस प्रकार प्रत्येक सिक्के के दो पेहलु होते है, सुख के साथ दुख का भी सामना करना पड़ता है यह सच्चाई विज्ञान के साथ भी लागू है क्योंकि— "Science is a good servent but a bad master

अर्थात विज्ञान एक अच्छा सेवक है परन्तु बुरा स्वामी है। कहा गया है—

"सावधान! हे मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार
काँट मत लेना अंग बड़ी तीखी है ये धार।।

ii) विनाशकारी युद्ध सामग्री का निर्माण — विज्ञान के द्वारा विनाशकारी युद्ध सामग्री का निर्माण हो रहा है जो पल भर में पृथ्वी को नष्ट कर सकती है।

कहने को तो बड़ी खुशरंग है दुनिया,
फुलों की एक हसीन पंखुड़ी है दुनिया।
पर एक एटमी युग में
राख के ढेर पर रखी है दुनिया।

iii) पर्यावरण का दुषित होना — बड़े-बड़े कल कारखानों के विषैल धुंए से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। जल प्रदूषण का कारण भी विज्ञान ही है।

लोग संगमरमर हुए हृदय हुआ इस्पात,
बर्फ हुई संवेदना खत्म हुई सब बात।।

iv) भौतिकवादी दृष्टिकोण — विज्ञान ने भौतिकवादी दृष्टिकोण से भी लोगो को हानि पहुचाई है। आज का मनुष्य

3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

भोगवादी और दृष्टि कोण से भी पराजित हो रहा है।

"घर-घर में फैला विज्ञान का आज प्रकाश
करता दोनों काम यह नव- निर्माण विनाश"

7 उपसंहार :- वस्तुतः विज्ञान अपने अंदर विनाश और निर्माण दोनो ही शक्तियाँ समेटे हुए है। यह तो उसके कर्ता पर निर्भर करता है कि वह उसे कैसे प्रयोग करे क्योंकि यह विष्णु के समान सबका पालक है पर नैतिक अंकुश के अभाव में शंकर के समान संहार करने वाला भी बन सकता है।

'भला बुरा न कोई रूप से कहलाता है,
दृष्टि भेद स्वयं दोष, गुण दिखलाता है,
कोई कमल की कली ढूँढता है किचड़ में
किसी को चाँद में भी दाग नजर आता है।'

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

4 | योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग